Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 4

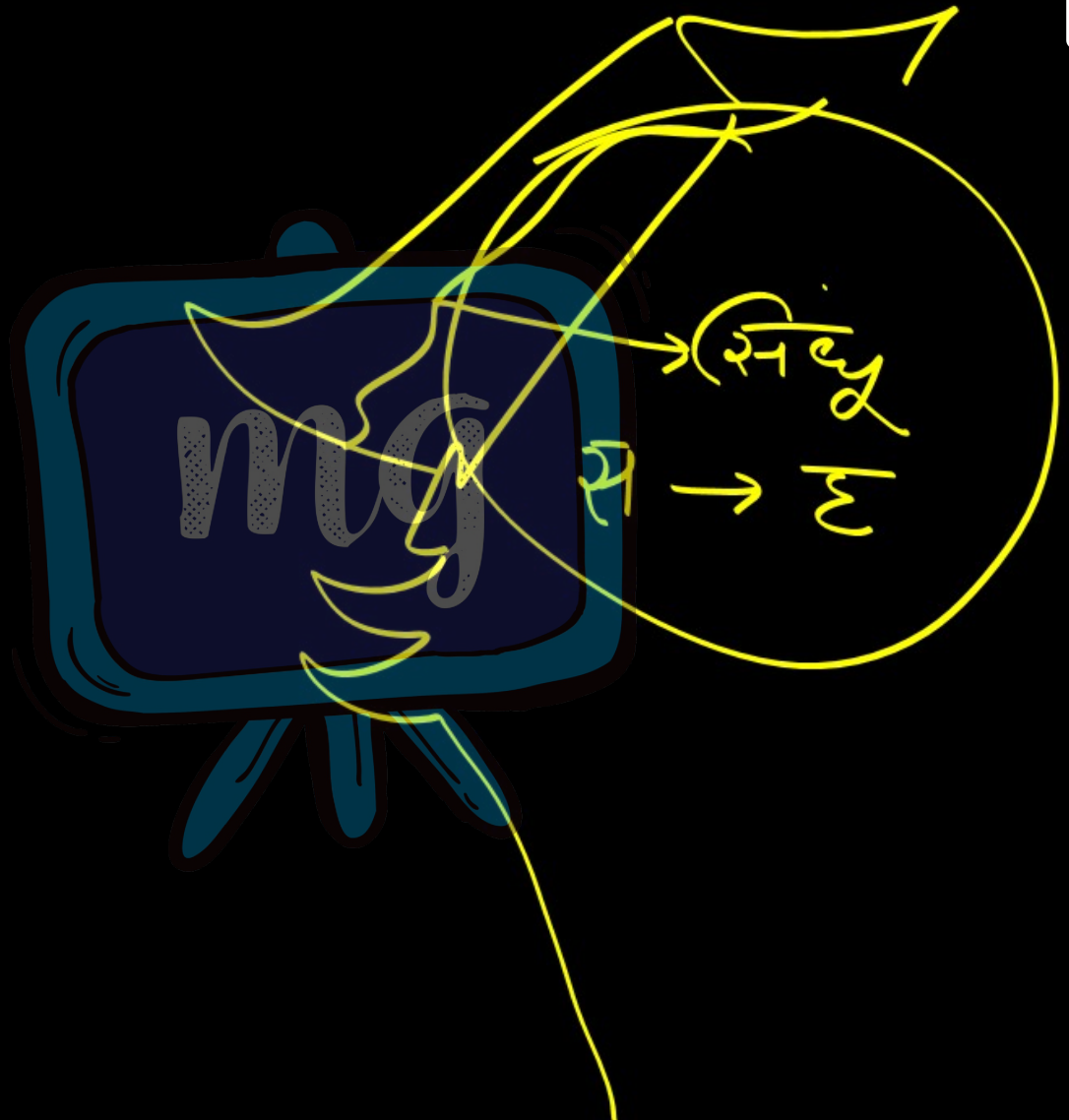
विचारक, विश्वास और इमारतें
सांस्कृतिक विकास (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 7

प्रीतेश जोशी

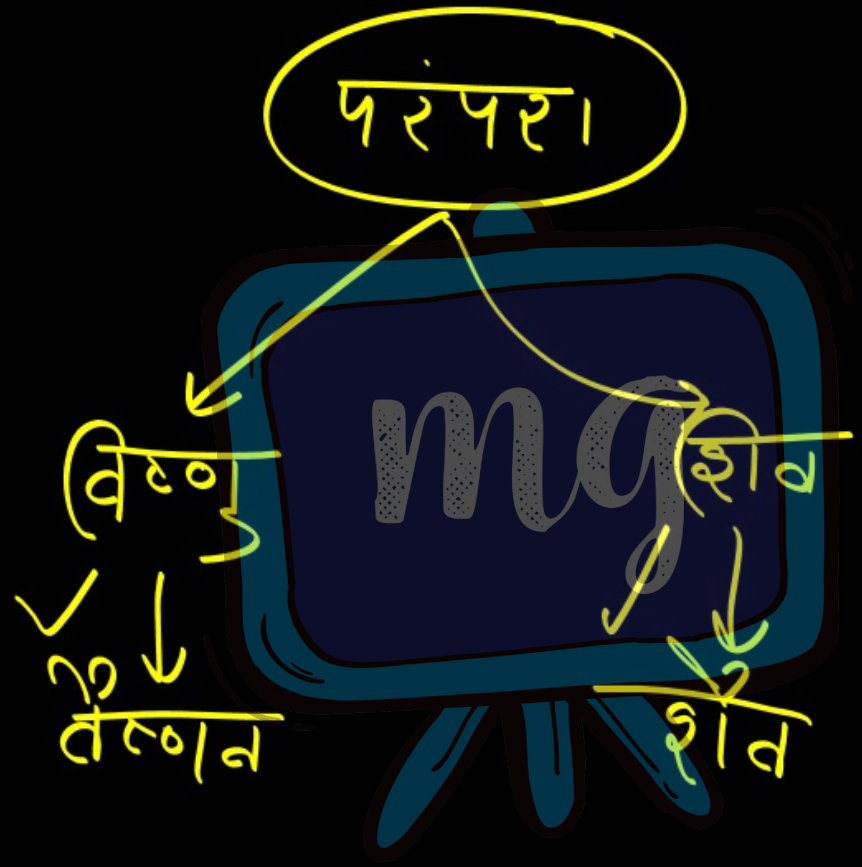
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

वैष्णववाद

- इसमें कई अवतारों के इर्द-गिर्द पूजा पद्धतियाँ विकसित हुईं।
- इस परंपरा के अंदर दस अवतारों की कल्पना है।
- यह माना जाता था कि पापियों के बढ़ते प्रभाव के चलते जब दुनिया में अव्यवस्था और नाश की स्थिति आ जाती थी तब विश्व की रक्षा के लिए भगवान अलग-अलग रूपों में अवतार लेते थे।
- संभवतः अलग-अलग अवतार देश के भिन्न-भिन्न हिस्सों में लोकप्रिय थे।
- इन सब स्थानीय देवताओं को विष्णु का रूप मान लेना एकीकृत धार्मिक परंपरा को दर्शाता था।
- कई अवतारों को मूर्तियों के रूप में दिखाया गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- दूसरे देवताओं की भी मूर्तियाँ बनीं। शिव को उनके प्रतीक लिंग के रूप में बनाया जाता था। लेकिन उन्हें कई बार उनको मनुष्य के रूप में भी दिखाया गया है।
- ये सारे चित्रण देवताओं से जुड़ी हुई मिश्रित अवधारणाओं पर आधारित थे।
- इन देवताओं की खूबियों और प्रतीकों को उनके शिरोवस्त्र, आभूषण, आयुधों (हाथ में धारण अस्त्र) और बैठने की शैली से इंगित किया जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

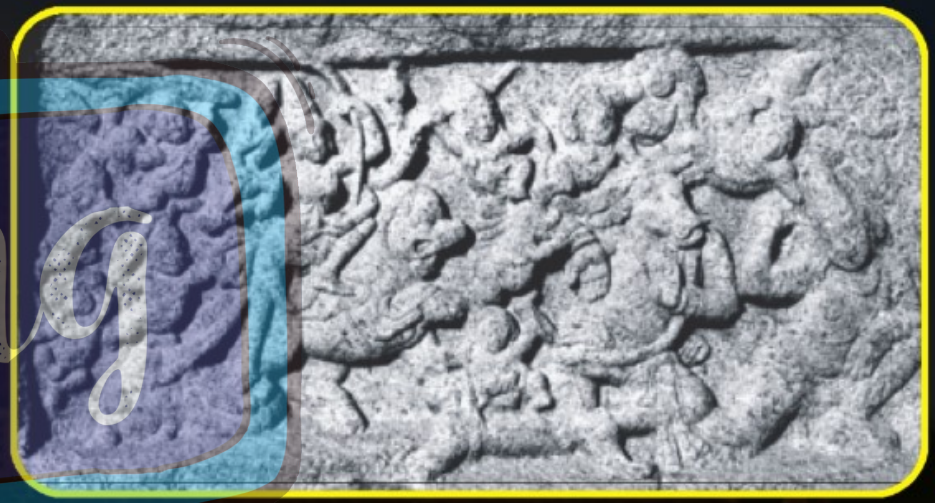
नृसिंह



विष्णु का वराह अवतार : जिसने उन्हें पृथ्वी देवी को बचाते हुए दिखाया गया है। (लगभग छठी सदी, एहोल, कर्नाटक)

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



महाबलीपुरम् : (तमिलनाडु) में दुर्गा
की एक मूर्ति (छठी सदी)

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

९. वैष्णवाद की परंपरा पर एक विस्तृत लेख लिखें ?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



मूर्तियों के अर्थ तथा पुराण :-

- इन मूर्तियों के अंकन का मतलब समझने के लिए इतिहासकारों को इनसे जुड़ी हुई कहानियों से परिचित होना पड़ता है।
- कई कहानियाँ प्रथम सहस्राब्दि के मध्य से ब्राह्मणों द्वारा रचित पुराणों में पायी जाती है जिनमें बहुत से ऐसे किस्से है जो सैकड़ों वर्ष पहले रचने के बाद सुने और सुनाये जाते रहे थे।
- इनमें देवी देवताओं की भी कहानियां हैं।
- इन्हें संस्कृत श्लोकों में लिखा गया था तथा इन्हें ऊंची आवाज में पढ़ा जाता था जिसे कोई भी सुन सकता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- महिलाएं और शूद्र जिन्हें वैदिक साहित्य पढ़ने-सुनने की अनुमति नहीं थी, पुराणों को सुन सकते थे।
- पुराणों की ज्यादातर कहानिया आपसी मेल-जोल से विकसित हुई।
- पुजारी, व्यापारी और सामान्य स्त्री-पुरूष एक जगह से दूसरी जगह आते जाते समय अपने विश्वासों और अवधारणाओं का आदान-प्रदान करते थे।
- उदाहरण के लिए हम जानते हैं कि - वासुदेव - कृष्ण मथुरा इलाके के महत्वपूर्ण देवता थे। कई शताब्दियों के दौरान उनकी पूजा देश के दूसरे इलाकों में भी फैल गई।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

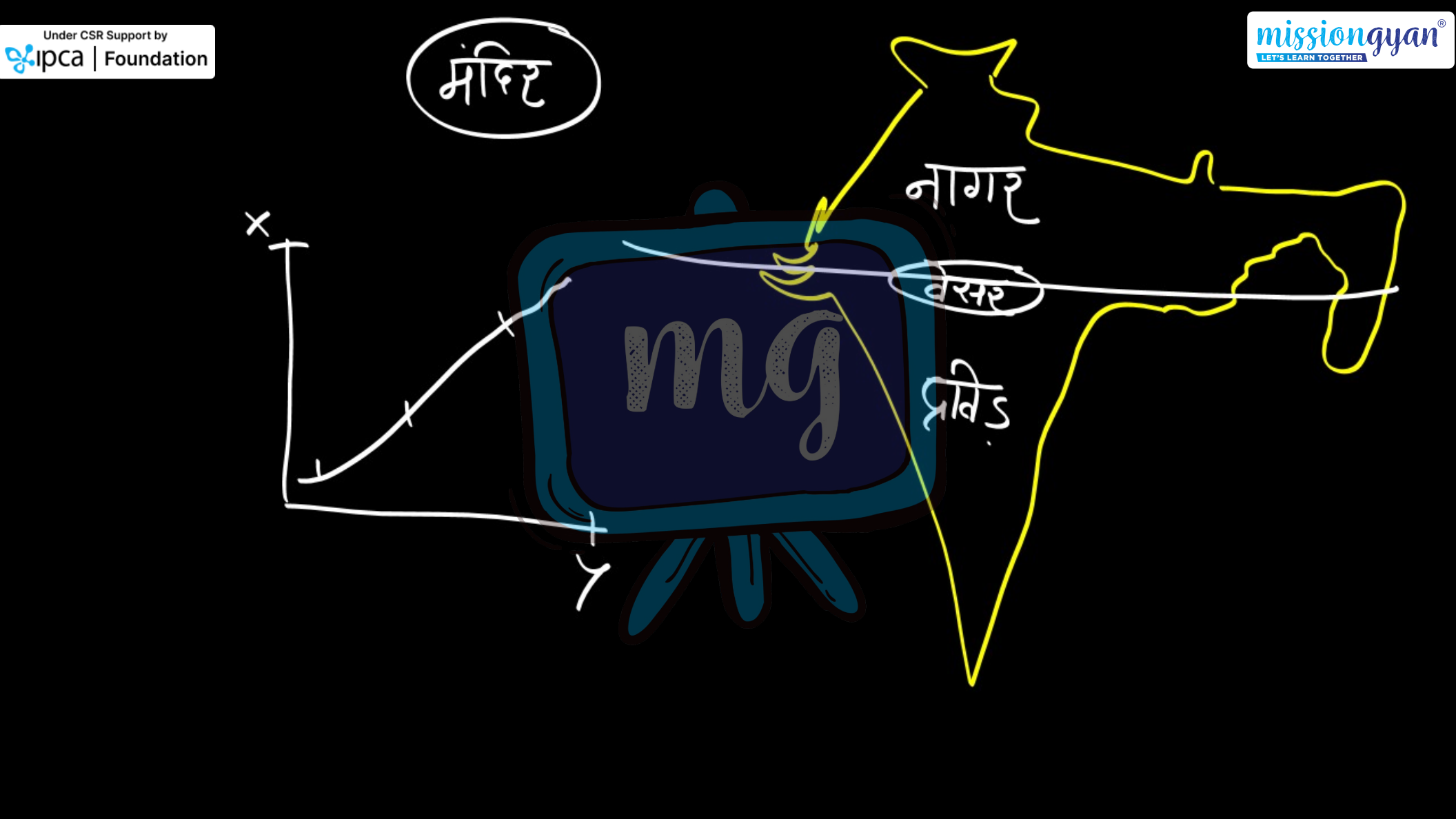
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. इतिहासकार मूर्तियों को समझने के लिए किस प्रकार ग्रंथों का सहारा लेते थे? स्पष्ट करें?

Q. पुराणों और वेदों के बीच अन्तर स्पष्ट करें? (1W)

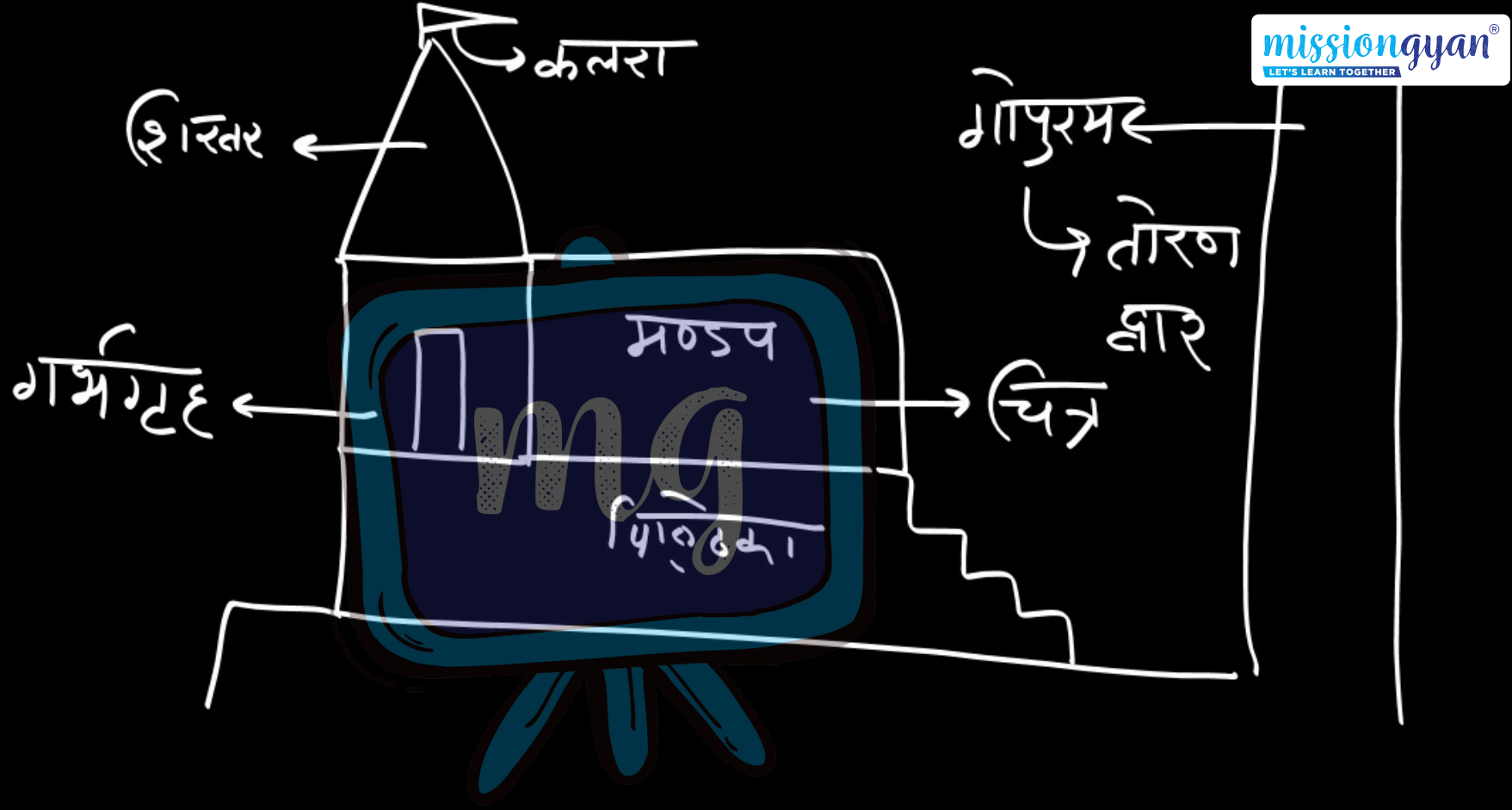
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मंदिरों का बनाया जाना

- जिस समय साँची जैसी जगहों में स्तूप अपने विकसित रूप में आ गये थे उसी समय देवी-देवताओं की मूर्तियों को रखने के लिए मंदिर बनाये गये।
- शुरू के मंदिर एक चौकोर कमरे की तरह थे जिन्हें गर्भगृह कहा जाता था।
- इनमें एक दरवाजा होता था जिससे उपासक मूर्ति की पूजा करने के लिए भीतर प्रविष्ट हो सकता था।
- धीरे-धीरे गर्भगृह के ऊपर एक ऊँचा ढाँचा बनाया जाने लगा जिसे शिखर कहा जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पुराण
रामायण
महाभारत

मंदिर की दीवारों पर अक्सर भित्ती -चित्र उत्कीर्ण किये जाते थे।



शेषनाग पर आराम करते विष्णु की मूर्ति,
देवगढ़ (उ.प्र.), पांचवी सदी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जलाशय



एक मंदिर, देवगढ़ (उत्तर प्रदेश), पाँचवी सदी

- बाद के युगों में मंदिर स्थापत्य का काफी विकास हुआ और मंदिरों के साथ विशाल सभास्थल, ऊँची दीवारें और तोरण भी जुड़ गए।
- जल आपूर्ति का इंतजाम भी किया जाने लगा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



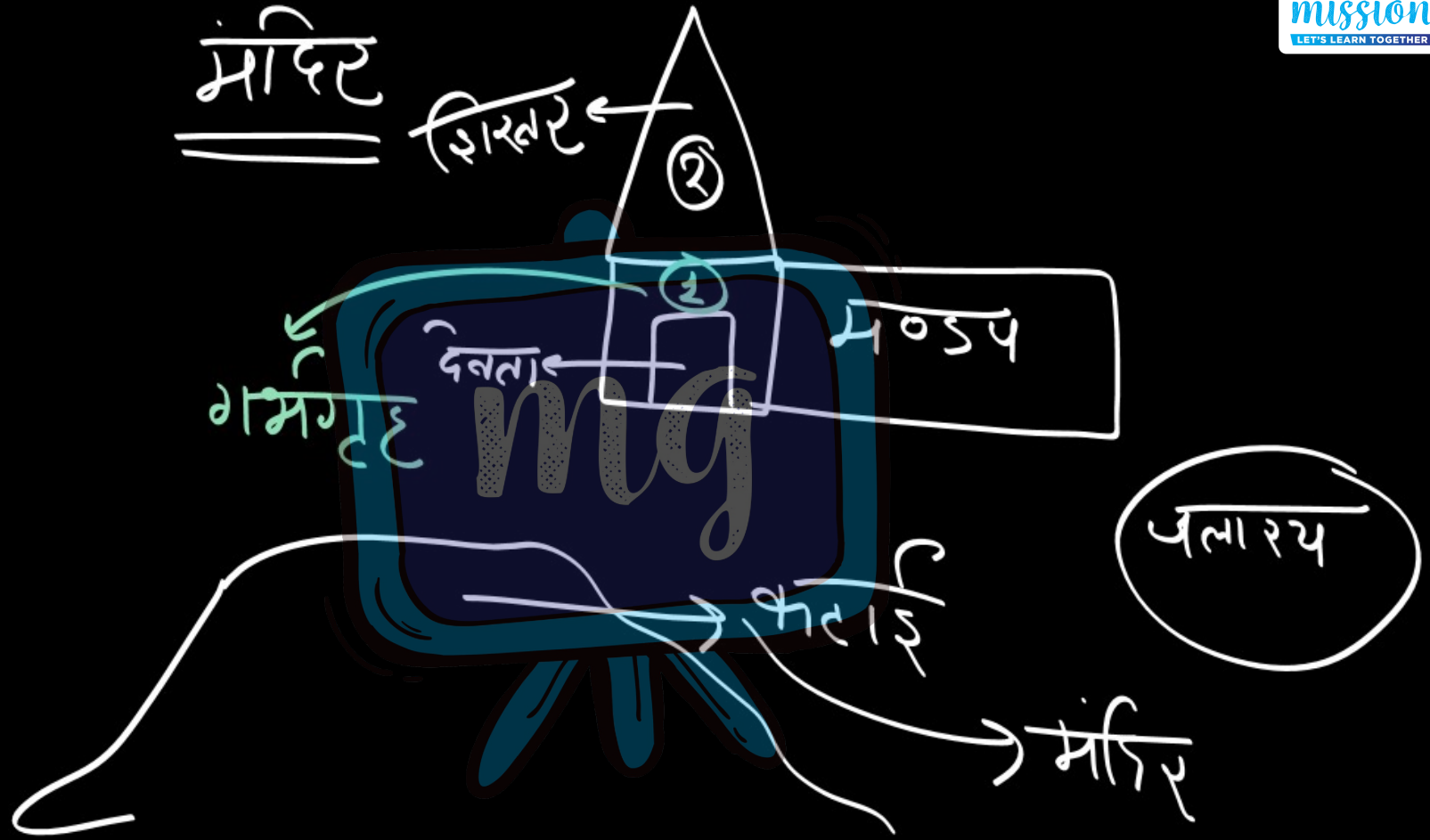
- शुरू-शुरू के मंदिरों की एक खास बात यह थी कि इनमें से कुछ पहाड़ियों को काट कर खोखला करके कृत्रिम गुफाओं के रूप में बनाये गये थे।
- कृत्रिम गुफाऐं बनाने की परम्परा काफी पुरानी थी।
- सबसे प्राचीन कृत्रिम गुफाऐं ईसा पूर्व तीसरी सदी में असोक के आदेश से आजीविक सम्प्रदाय के संतों के लिए बनाई गई थीं।



बराबर की गुफाऐं,
बिहार, 300 ई. पूर्व

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. प्राचीन काल (1 + 600ई - 600ई) मे मंदिर स्थापत्य कला मे किस प्रकार बदोतरी हुई ?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कैलाशनाथ मंदिर

- मंदिर बनाने की परम्परा अलग-अलग चरणों में विकसित होती रही।
- इसका सबसे विकसित रूप आठवीं सदी के कैलाशनाथ (शिव का एक नाम) के मंदिर में नजर आता है जिसमें पूरी पहाड़ी काटकर उसे मंदिर का रूप दे दिया गया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



कैलाशनाथ मंदिर एलोरा (महाराष्ट्र) यह सारा ढांचा
एक चट्टान को काटकर तैयार किया गया हैं

एक ताम्रपत्र अभिलेख जिसमें एलोरा के प्रमुख
तक्षक जिसने इनका निर्माण समाप्त करने के बाद
आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहता है –
''हे भगवान, यह मैंने कैसे बनवाया?''

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

क्या हम सब कुछ देख समझ सकते हैं?

- इस अध्याय में अब तक हमें हमारे अतीत की समृद्ध दृश्य परंपराओं की एक झलक मिल चुकी है।
- ये दृश्य परंपराऐं ईंट और पत्थर से निर्मित स्थापत्य कला, मूर्तिकला और चित्रकला के रूप में हमारे सामने आई हैं।
- समय के बहाव में बहुत कुछ नष्ट हो गया है लेकिन जो बचा है और संरक्षित है वह हमें उन भव्य कलाकृतियों के निर्माताओं जैसे मूर्तिकारों, राजगीरों और वास्तुकारों की दृष्टि से परिचित कराता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



लेकिन क्या हम उनके संदेश को बिना दुविधा के अपने आप समझ सकते हैं ?

जो लोग इन कलाकृतियों को देखते और पूजते थे उनके लिए इनका क्या महत्व था ?

क्या हम इस बात को समझ पाऐंगे ?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

